

विचार बिन्दु

मूर्ख आदमी अपने बड़े से बड़े दोष अनदेखा करता है, किन्तु दूसरे के छोटे से छोटे दोष को देखता है। -संस्कृत सूक्ति

क्या हैं अखिल भारतीय सेवाओं से जनता को आशाएं-निराशाएं?

राज्यव्यवस्था राजशाही-सामंती हो, अधिनायकवादी हो, लोकतांत्रिक या कैसी भी हो राजकार्यों के सम्पादन, सतता के लिए स्थाई राज-सेवक तंत्र आवश्यक है। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश सरकार, उससे पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी और विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न राज्यों की राज्यव्यवस्था संचालन के लिए, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सरकारी अधिकारियों कर्मचारियों के स्थायी तंत्र थे।

आजादी के बाद पूर्ववर्ती समकक्ष सेवाओं इंडियन सिविल व पुलिस सेवाओं (ICS, IP) को IAS, IPS नामकरण के साथ चालू रखा गया। इन सेवाओं को भारतीय संविधान की धारा 312(2) में भारतीय प्रशासनिक व पुलिस सेवा नामकरण के साथ शामिल किया गया। इन्हें भारत की संसद द्वारा सृजित माना गया।

1952 में संसद द्वारा पारित अखिल भारतीय सेवा अधिनियम के अंतर्गत इन सेवाओं के सृजन के लिए केंद्र सरकार को अधिकृत किया हुआ है। कालांतर में अखिल भारतीय वन सेवा का और गठन किया है। वर्तमान में यही तीन सेवाएं अखिल भारतीय सेवाएं हैं।

आम आदमी का मुख्यतः IAS, IPS अधिकारियों से ज्यादा काम पड़ता है।

जिन क्षेत्रों विभिन्न श्रेणियों के संरक्षित वन क्षेत्र हैं, अभ्यारण हैं वहां के लोगों का और पर्यावरण से जुड़े कार्यों से प्रभावित लोगों का अधिकारियों से वास्ता पड़ता है।

** भारत में लोकतांत्रिक-जनहितकारी राज्यव्यवस्था अपनाई है। इसमें लोकसभा, विधानसभाओं के चुनावों के आधार पर बहुमत प्राप्त दल को या गठबंधन की सरकारों का गठन होता है। मंत्रिमंडल सरकार का सर्वोच्च निकाय है। बहुमत प्राप्त सरकार पर अपनी नीतियों के अनुरूप और जनता से किए वायदों की पूर्ति के लिए कानून-नियम-नीतियां बनाने, लागू करने-करवाने का, जनता से व अन्य स्रोतों से प्राप्त धन के सदुपयोग का दायित्व है। सरकारें लोकसभा या विधानसभाओं में अपने निर्णयों, कर्तव्यों प्रति उत्तरदायी होती हैं।

IAS, IPS आदि सेवाओं से अपेक्षा:-यह आशा की जाती है कि इन सेवाओं के अधिकारी संविधान, उसके अनुसार निर्मित विधानों, नियमों की पालना करते हुए, पूर्ण निष्ठा, समर्पण, समानता, सक्षमता, राग-द्वेष-धर्म-जाती-किसी धार्मिक-सामाजिक-सांस्कृतिक-राजनीतिक संगठन और स्वयं की व्यक्तिगत भावनाओं से रहित होकर, कार्य करते हुए सरकारी नीतियों का क्रियान्वयन करेंगे। इन सब बातों का ध्यान रखते हुए अपने अधीनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों का मार्गदर्शन कर, क्रियान्वयन करवाएंगे।

IAS, IPS अधिकारियों से जनता अपेक्षा करती है कि वे अपने दायित्वों, कार्यों के निष्पादन करते हुए जनता व उनके प्रतिनिधियों के साथ पूर्ण आदर सम्मान से उनके अभाव-अभियोगों-सुझावों को सुनें और यथासम्भव समाधान करेंगे।

मुख्यतः कलेक्टर, एसपी के कार्य कलापों से इन सेवाओं को छवि के बारे में आम आदमी अपने विचार बनाता है। आम आदमी जिला स्तर पर इन अधिकारियों में राज्य सरकार को देखता है।

एक बहुत ही संजीदा विधायक ने एक कलेक्टर से कहा कि सत्ता पक्ष के लोगों की सुनें के लिए तो सम्बंधित पार्टी के MLA व दूसरे जन प्रतिनिधि, पार्टी के कार्यकर्ता होते हैं। उनका आवाज तो जिला व उपर तक पहुंच जाती है किन्तु जो विपक्ष के या गैर राजनीतिक लोग होते हैं वे आशा करते हैं कि कलेक्टर एसपी उनकी बात सहानुभूतिपूर्ण रूप के साथ सुनें और समस्याओं का समाधान करने या करवाएं।

एक दूसरे संजीदा विधायक ने एक नवयुवक एअर को कहा कि विधायक होने के नाते उनके पास लोग अपनी समस्याएं, अभियोग लेकर आएंगे और उनको अधिकारियों के पास पहुंचाना, समाधान करवाना उनका कर्तव्य है। इसलिए उनकी अपेक्षा है कि उनकी बातों को विस्तार से, ध्यानपूर्वक सुना जाए-नियमों के अनुसार निर्णय करने के लिए अधिकारी स्वतंत्र हैं-उसमें उनका कोई आग्रह-दुराग्रह नहीं होगा।

इस प्रकार के संजीदा जनप्रतिनिधि कम होते जा रहे हैं।

पार्टियों कार्यकर्ताओं का केवल भीड़ इकट्ठी करवाने और नारे लगवाने में उपयोग करती है। उनका राज व्यवस्था व जन समस्याओं के उचित निवारण के तरीकों का प्रशिक्षण दिया ही नहीं जाता।

आईएसएस अधिकारी जब नीति निर्माण करने के स्तर पर मंत्रियों के साथ कार्य करते हैं तब उनका परम दायित्व है कि तथ्यों, कानून-नियमों के अनुसार

राज व्यवस्था राजशाही-सामंती हो, अधिनायकवादी हो, लोकतांत्रिक या कैसी भी हो राजकार्यों के सम्पादन, सतता के लिए स्थाई राज-सेवक तंत्र आवश्यक है। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व ब्रिटिश सरकार, उससे पहले ईस्ट इंडिया कम्पनी और विभिन्न कालों में भिन्न-भिन्न राज्यों की राज्यव्यवस्था संचालन के लिए, उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप सरकारी अधिकारियों कर्मचारियों के स्थायी तंत्र थे।

उन्हें सर्वोत्तम राय दें। राय देने के उपरांत जो निर्णय मंत्री अथवा मंत्री मंडल का हो उसकी पूर्ण रूपेण पालन करें।

आईएसएस का दायित्व कानून व्यवस्था बनाए रखने और अपराध नियंत्रण, अनुसन्धान व अभियोजन है। इस दृष्टि से का कार्य क्षेत्र सीमित है किन्तु इस सेवा के अधिकारियों की निष्ठा, कार्य प्रणाली, दक्षता, व्यवहार का सरकारों को छवि बनाने या बिगड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जनता का आईएसएस, आईपीएस के सम्बंध में यह परसेप्शन है कि इन अधिकारियों के सेवा शर्तें अन्य प्रादेशिक अधिकारियों-कर्मचारियों की तुलना में काफी ज्यादा हैं। इनके पास बहुत अधिकार होते हैं। वस्तुतः सरकार यही लोग चलाते हैं आदि, आदि।

** हाँ, इन अधिकारियों को किन किन पदों पर लगाया जाएगा, यह केंद्र व राज्य सरकार के स्तर पर तय होता है। प्रादेशिक सेवाओं की तुलना में वेतन, बहुत ज्यादा तो नहीं किन्तु कुछ अधिक होता है। पदोन्नतियाँ भी कर्मोत्थे निश्चित समय सीमा में हो जाती हैं।

सबसे बड़ी बात यह है सरकारें इनके स्थानांतरण में पूर्णतः निरंकुशता नहीं अपना सकती। इन्हें आप पदस्थान प्रतीक्षा में तो रख सकते हैं किन्तु किसी की सनकों की पूर्ति के लिए हर किसी स्थान-पद पर नहीं लगाया जा सकता। पदस्थान के स्थान भी अधिकांशतः जिला मुख्यालयों से नीचे नहीं है। अधिकारियों के भी पदस्थान जिला मुख्यालय या चिह्नित अस्थानों आदि स्थानों पर ही लगा सकते हैं। राज्य सरकार निर्णयित तो कर सकती है किन्तु उसमें भी निरंकुशता पर नियंत्रण है।

***आज कल यह सुनना, पढ़ना आम है कि मंत्री, विधायक, सत्ताधारी दल के कार्यकर्ता आरोप लगाते हैं कि अधिकारी उनकी नहीं सुनते। अधिकांश अधिकारी ऐसे नहीं होते किन्तु अपवाद भी सामने आते रहते हैं।

चाहे पोलिटिसियन्स का अपनी गैरवाजिब बात मनवाने के दुराग्रह जो या अधिकारियों का अनुचित, रोड़ा लगाने-काम को डिले करने का दुराग्रह-पूर्वाग्रह हो दोनों ही अनुचित व निंदनीय हैं।

**राज नेताओं से अपेक्षा:-अच्छे राजनेता, व्योरेट्टिस के डोमेंट नोलेंज व उनकी राय का, जन हित में सर्वोत्तम सदुपयोग करें। दाब, धौंस, बेहिसाब व नियम कायदों के ट्रांसफर, अलिबेजिन्स, तंत्र के माध्यम से विरोधियों के हैरिसमेंट को राजनीति अल्पायु होती है। ऐसे अपने उदाहरण गिनाए जा सकते हैं जहाँ ऐसे नेताओं का सूर्यास्त होते ज्यादा समय नहीं लगता। उनको यह समझना होगा कि अधिकारियों की काम करने की शक्तियाँ मर्यादित है। मंत्री लोग नियम कायदों में बदलाव के लिए सक्षम हैं, उन्हें कार्यकर्ताओं के काम करने के लिए इस राजमार्ग का उपयोग करना चाहिए। अधिकारियों से क्यों उलझन?

***कुछ बातें जो आम लोगों में चर्चा का विषय बनती हैं और इन सेवाओं के अधिकारियों की छवि खराब करती हैं:-

*जनता में यह चर्चा का विषय बना है कि कई IAS, IPS - अधिकारी ट्रांसफर-पोस्टिंग लिए, पोलिटिसियन्स के माध्यम से लॉबीजिंग करवाते हैं। ऐसा करने वाले अधिकारी निष्पक्ष नहीं हो सकते।

*यह भी जन विमर्श में सुनने को मिल जाता है कि कई अधिकारी, मामलों में बिना तथ्य की गहन परीक्षण व बिना अपना सुविचारित दृष्टिकोण बताए, मंत्रियों के कहने अनुसार टिप्पणियाँ लिख देते हैं।

*नीचे के स्तर के पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ अधीनस्थ अधिकारियों, कर्मचारियों का ज्यादा काम पड़ता है और नाइतफाकी भी होती है। कुछ कार्यकर्ता इन कामियों को अपने बड़े नेताओं के जरिये परेशान करवाते हैं, अनुचित ट्रांसफर करवाते हैं। उनके वाजिब संरक्षण का दायित्व उच्चधिकारियों का है किन्तु कई बार इस दायित्व के निर्वहन के लिए प्रयास ही नहीं किए जाते। माना कि अंतिम निर्णय मंत्री का ही होगा किन्तु तथ्यात्मक विमत तो टिप्पणियों में हो।

*किन्हीं मामलों में यह भी सुनने को मिल जाता है कि उच्चधिकारियों में मौखिक आदेश देकर काम कर लिया किन्तु आवश्यकता पड़ने पर आदेश कम्पन नहीं करते हैं।

*सबसे निचमों में व्याख्या करने की डिस्क्रिशनरी पावर अधिकारियों के पास होती है। इस अधिकार का जन हित में या किसी व्यक्ति के हित में उपयोग करने में कोताही नहीं बतनी चाहिए बशर्ते कि इसमें किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को हानि न पहुंचे, उनके किसी अधिकार का हनन न होता हो। लेकिन बहुत से अधिकारी ऐसे मामलों को टालने ऊपर खिसकाने की बिमारी ग्रस्त होते हैं या कुछ अधिकारी कभी कभी स्वहित में दुरुपयोग करने से नहीं चूकते।

*पहले नहीं या किन्तु कुछ समय से अखिल भारतीय सेवाओं के कुछ अधिकारियों पर पार्टी विशेष या कुछ सामाजिक-सांस्कृतिक-जातीय संगठनों की विचारधाराओं को ध्यान में रख कर कार्य करने की खुरस-फुसर भी सुनने को मिल ही जाती है।

*सबसे बड़ी बात जिसकी आम आदमी में चर्चा रहती है वह यह है कि बहुत से जनप्रतिनिधि और अधिकारी मिलकर घंटाकार करते हैं। दोनों में से अकेले के लिए यह करना सम्भव तो है किन्तु अत्यंत कठिन व कष्टक भरा।

-अतिथि सम्पादक, महावीर सिंह, आई.ए.एस. (से.नि.)



डॉ रामावतार शर्मा

जब भी भूमि के किसी भाग पर आबादी वहां के संसाधनों से ज्यादा हो जाती है तो उस स्थान पर संघर्ष प्रारंभ हो जाता है। जब संघर्ष प्रारंभ होता है तो लोग जाति, धर्म, कबीले आदि में बंट जाते हैं ताकि सामूहिक शक्ति का निर्माण हो और संघर्ष में विजय हासिल हो। तत्करीबन यही बात प्रजातंत्र में सत्ता हासिल करने के लिए अपनाए गए हथकंडों में से भी एक होती है। ऐसा होना एक बड़ी नकारात्मक बात है पर होता यही है। इन परिस्थितियों में आबादी में बड़े स्तर का ध्रुवीकरण होने लगता है और छोटी-सी बात से ही हिंसा की चिंगारी हर तरफ आग की तरह फैल सकती है। आज कल हम सोशल मीडिया द्वारा सच और झूठ दोनों का जोरदार प्रचार देख रहे हैं। अब यदि कोई यह सोचता है कि यह दुष्प्रचार यू ही चलता रहेगा तथा सत्ता पर कुछ लोगों का अधिकार बना रहेगा तो यह शायद एक बड़ी भूल सिद्ध हो। मानवीय

अस्तित्व के इतिहास में आज तक कोई भी ऐसी क्रिया नहीं हुई है जिसकी प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रतिक्रिया नहीं हुई हो।

जब आबादी तेजी से बढ़ती है तो सामाजिक भाईचारा भी तेजी से समाप्त होने लगता है। आबादी बढ़ने से विकास दर भी बढ़ती है तो कुछ लोग शोषण से संपन्न होने लगते हैं जिसके फलस्वरूप इन समूहों के कुछ लोगों में राजनीतिक महत्वाकांक्षा का जन्म होने लगता है।

राजनीतिक वर्चस्व के लिए लोगों का ध्रुवीकरण किया जाता है ताकि मत पेटी में एक ही दल को ज्यादातर मत मिलें। माहौल ऐसा बनाया जाता है कि मानो दूसरे लोग तुम्हारा सब कुछ छीनने को आतुर हैं, तुम्हारा धर्म, समाज और जाति खतरे में है, तुम्हारी संतान का भविष्य अंधकार में है। यदि इस विपत्ति से बचना है तो बस सिर्फ हमें ही चुनाव में सफल बनाओ और फिर बस चैन की बंसी बजाओ। पर ऐसा होता नहीं है चाहे जिसको सत्ता में बिठा दो। भला उन्नी का होता है जो सत्ताधारी लोगों को शोषण रूप से सत्ता में लाते हैं। आम जनता का तो पहले धर्म के आधार पर विभाजन होता है और फिर जाति और यहां तक कि गोत्र के नाम पर भी होने लगता है। समय के साथ तरह तरह की दरारें समाज के विभिन्न लोगों के मध्य अपना अस्तित्व जाहिर करने लगती हैं।

डॉक्टर हैसियत रखने वाले एक चिकित्सक और लेखक थे। उन्होंने सत्य को उजागर करने के लिए शोध पर आधारित एक पुस्तक लिखी है फेक्ट फुलनेस यानि तथ्यात्मकता। दूसरे उन्होंने देशों की सीमाओं को तोड़ पीडितों की सेवा के लिए मेडिसिन सांस फ्रंटियर यानि सीमा मुक्त चिकित्सा सेवा नामक एक अंतरराष्ट्रीय संगठन स्थापित किया है। सत्य के पोषक मानवतावादी डॉक्टर रोसलिंग के अनुसार विश्व दो भागों में बंटा हुआ है वो यानि हम और दैम यानि वे। हम से मतलब विकसित देश जहां लोग शिक्षित हैं, संपन्न हैं क्योंकि आबादी नियंत्रित है। वे मतलब तीसरी दुनिया के लोग, अशिक्षित, गरीब और बच्चों की प्लाटून के माता-पिता।

सन् 2002 के बाद तेज आर्थिक गतिविधियों के कारण भारत का एक वर्ग हम वाली स्थिति में तो पहुंच गया पर अब वही राजनीति को प्रतिस्पर्धा के कारण एक बड़ी दार पैदा हो गई है - हमारा और उनका। अब धर्म धर्मों नहीं धार्मिक विद्वानों को ही महत्व दिया जाने लगा है। हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि सभी अपनी अपनी सेनाएं बनाने लगे हैं। विप्र सेना, परशुराम सेना, करणी सेना, जैश मोहम्मद, जागीड सेना, इंडियन मुजाहिदीन, भीम सेना, सप्रॉट अशोक सेना, वीर तेजा जी सेना आदि असंख्य सेनाएं चंद स्वार्थी और सत्ता लोलुप लोग देश की जनता को धर्म और जातियों में विभाजित करने में सफल होते जा रहे हैं और सत्ता में बैठे लोग स्वयं सरकार के द्वारा जारी आंकड़ों को गुमनामी में धकेल

रहे हैं। भारत के धर्म आधारित कुछ आंकड़े जो भारत सरकार द्वारा ही जारी किए गए हैं कई लोगों की आंखों को खोल सकते हैं यदि वे सचेत होकर इनका अध्ययन करें। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वे को पहली रिपोर्ट (1990-92) के अनुसार भारत की कुल प्रजनन दर 3.39 बच्चे प्रति महिला थी जो 2019-21 में जारी पांचवी सर्वे में घट कर 1.99 रह गई है। कुछ लोग जो किसी गुप्त षडयंत्र द्वारा सत्ता हड़पने की बातें करते हैं उनके लिए इसी रिपोर्ट के अनुसार मुस्लिम कुल प्रजनन दर 1990-92 में 4.41 बच्चे प्रति महिला थी 2019-21 में यह दर 2.62 रह गई है। इस तरह से हम देख रहे हैं कि शहरीकरण, शिक्षा और जागरूकता के साथ धर्म आर्थिक दबाव आ जाता है तो लोग बच्चे कम पैदा करने लगते हैं। इसके साथ बाद स्वास्थ्य सुधारने से भी लोग बच्चों की अधिकता सदा कहते थे कि हमें दुष्प्रचार से बच कर तथ्यों पर आधारित बातों को खोजने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि वास्तविकता की जानकारी बेहतर जीवन योजनाएं बनाने में सहायक होती है।

आज एक विचार पर मनन करने का शायद समय आ गया है कि इन तथ्यांकित धार्मिक, जातीय सेनाओं से देश को क्या नुकसान हो सकता है?

चूंकि हम तीव्र सूचना विस्तारण के दौर से गुजर रहे हैं और युवाओं का एक वर्ग अपने आप को भविष्य को मुख्यमंत्री, मंत्री या विधायक माने घूम रहा है तथा उसी तरह की जीवनशैली येन केन प्रकारण बनाए हुए है। ये लोग ही इन तथ्यांकित सेनाओं के सरदार बने हुए हैं। यदि किसी दिन इन लोगों को अपने सपने टूटते नजर आए तो वे हिंसक होते देर नहीं लगाएंगे। आर्थिक रूप से पीडित कितने ही लोग हिंसा के तांडव में सम्मिलित हो सकते हैं।

बड़े नेता निज स्वार्थ के लिए धर्म का सहारा लेते हैं तो दोयम दर्जे के नेता जातिगत विष वमन करेंगे।

स्वार्थी की इन लड़ाइयों में पहली बली सबसे कमजोर लोगों की और दूसरे स्थान पर प्रतिभावन युवाओं की लगेगी। हो सकता है आज हम इसे मनगढ़त बना कहें पर इसकी संभावनाओं को नकारा नहीं जा सकता है।

हम और वे यह भेद सदा बना रहा है और आगे भी बना रहेगा। धरती पर सब कुछ एक बराबर कुछ नहीं होता है पर एक सभ्य समाज से उम्मीद की जाती है कि वह लोगों के बीच की खाई को कम बनाए रखे ताकि विशिष्ट परिस्थितियों में लोग खाई में लुप्त न हो जाएं। उन्हें खाई के पार जाने की संभावनाओं के साथ जीवन जीने की सुविधा मिलनी चाहिए।

-डॉ रामावतार शर्मा, (चिकित्सक एवं लेखक)

दिव्यांग असीम अग्रवाल की गणतंत्र पर भारत देश के लिए भावभीनी काव्यांजलि

भारत आज्ञादी से अब तक

15 अगस्त सन 47 को भारत था आजाद हुआ।

तब से ही एक नए युग का आगाज हुआ।

सदियों जुलूमों से जूझ रही धरती को यह वरदान मिला।

वर्ष 2 माह 11 दिन 18 में बन कर के हमें संविधान मिला।

तब से ही खत्म तानाशाही का अत्याचार हुआ।

26 नवंबर सन् 49 को संविधान तैयार हुआ।

गणतंत्र ने स्वतंत्रता को सही अर्थ दिया।

क्या है कर्तव्य और अधिकार यह तय किया।

इसके आने से राजतंत्र समाप्त हुआ।

इससे ही तो लोकतंत्र है व्याप्त हुआ।

संविधान से ही अधिकारों का है ज्ञान हुआ।

दलितों-पतितों हर वर्ग का है सम्मान हुआ।

अंग्रेजों के शोषण से देश को मुक्ति मिली।

भारत वर्ष को आत्मा विकास की युक्ति मिली।

जन-जन के मन में आजादी की उमंग उठी।

नव थल और जल में भारत की ही तरंग उठी।

जन गण मन हर मन में है गुंजर रहा।



दिव्यांग असीम अग्रवाल

मन मुक्त गगन में उड़ने का पथ ढूँढ रहा।

जब से आया गणतंत्र देश में शांति हुई।

तब ही जाकर श्वेत और हरित यहां पर क्रांति हुई।

फिर विश्व पटल पर भारत का निर्यात बड़ा।

और धीरे-धीरे देशों से आयात घटा।

अर्थव्यवस्था में अपनी उदारीकरण का दौर आया।

उद्योगों में भी तब जाकर के जोर आया।

खेलों से भी बनता भविष्य यह विश्वास हुआ।

इस दौर में अब विज्ञान का भी है विकास हुआ।

स्वामी जी का स्वप्न सुनहरा सत्य हुआ।

भारत विश्व गुरु सिद्ध यह तथ्य हुआ।

हो युद्ध यहां हथियारों से या बीमारी से।

है देश खड़ा अब तो पूरी तैयारी से।

अब कौशल से हमें ढूँढना अवसर होगा।

भारत तब ही विकास पथ पर अग्रसर होगा।

-दिव्यांग असीम अग्रवाल, पुत्र विजय कुमार अग्रवाल, मदनगंज-किशनगढ़

75 वर्ष के खिलाड़ी अरुण सिंह ने कांस्य पदक जीता

जोधपुर, (कांस)। शाला कीड़ा संगम केन्द्र गौशाला मैदान जोधपुर के 75 वर्ष आयु वर्ग के खिलाड़ी अरुण सिंह बारहठ ने मसकट ओमान आयोजित विश्वस्तरीय वर्ल्ड वेटरन टेबल टेनिस चैम्पियनशिप-2023 भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए कांस्य पदक प्राप्त कर शाला संगम केन्द्र, जोधपुर, राजस्थान और भारत का नाम गौरवन्वित किया है।

विश्वस्तरीय स्पर्धा में धाक जमाकर लौटने पर अरुण सिंह बारहठ का शाला क्रोडा संगम केन्द्र परिवार द्वारा सम्मान समारोह आयोजित कर उनका भावपूर्ण सम्मान एवं अभिनंदन किया गया। इस अवसर पर राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश संदीप मेहता, विजय विश्वासी, पुष्पेन्द्र सिंह भाटी, जिला कलक्टर हिमांशु गुप्ता, मधुलिना एंसेईएम फास्ट ट्रेक, एवं टेबल टेनिस एसोसिएशन के पदाधिकारी मुकुल गुप्ता, संजय गहलोट, कपिल मिर्धा, ज्योतिषाचार्य

■ मसकट (ओमान) में कांस्य पदक जीत कर बढ़ाया जोधपुर और देश का गौरव
■ पदक जीतकर लौटने पर अरुण सिंह बारहठ का सम्मान एवं अभिनंदन किया

सुरेश श्रीमाली, जिला शिक्षा अधिकारी इसाफ खां जई, रंजित खान, सुमिष्ठा पंवार एवं शाला क्रोडा संगम केन्द्र प्रशिक्षक रीटा नरूका, राजेन्द्र प्रसाद शर्मा, रानु सिंह चौहान, दिनेश भारतीय, केशव सिंह देवडा, पुष्पेन्द्र सिंह आदि समस्त स्टाफ द्वारा बारहठ एवं सुश्री सुनिधि दिवान का सम्मान किया गया। इन खिलाड़ियों को साफा, मोमेंटो एवं उच्च कोटि के रैकेट प्रदान कर सम्मान किया गया।

ठण्ड का असर बढ़ा, माउंट आबू में तापमान माइनस तीन डिग्री रहा

माउंट आबू, (निसं)। सिरौही जिले में दो दिन की राहत के बाद फिर से ठण्ड का असर बढ़ गया है। प्रदेश के एक मात्र हिल स्टेशन माउंट आबू में न्यूनतम तापमान पिछले दो दिनों से 1 डिग्री दर्ज किया गया जा रहा था। जिसमें बुधवार को 4 डिग्री की गिरावट दर्ज हुई। पारे में गिरावट के बाद बुधवार का न्यूनतम तापमान माईनस 3 डिग्री दर्ज किया गया। पारे में गिरावट के बाद मैदानी इलाकों सहित कई जगह बर्फ की परत जमी पड़ी गई। वहीं अलसूबह माउंट आबू में धुंध भी छाई रही।

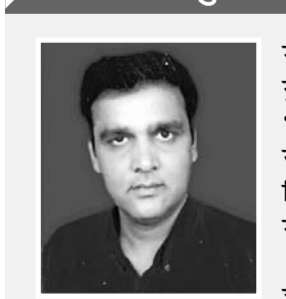
माउंट आबू में पारे में गिरावट के चलते लोगों को दिनचर्या में इसका खासा असर देखने को मिल रहा है। लोग दर तक घरों में ढुबके रहते हैं। वहीं स्कूली बच्चों और नौकरी और मजदूरी पर जाने वाले स्थानीय लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

■ पारे में गिरावट के बाद मैदानी इलाकों सहित कई जगह बर्फ की परत जमी
■ सर्दी के प्रकोप के बीच अलाव जलाकर लोग सर्दी से बचने का जतन कर रहे हैं
■ माउंट आबू में बीते दस दिनों से पारे में उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है

माउंट आबू में बीते दस दिनों से पारे में उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है। बीते दस दिनों में 8 दिन न्यूनतम तापमान जमाव बिंदु से नीचे रहा। वहीं दो दिनों से एक डिग्री थी जो बुधवार को 4 डिग्री गिरकर माईनस 3 डिग्री दर्ज किया गया। पारे में गिरावट के बाद माउंट आबू के मैदानी इलाकों, पहाड़ों और इलाके में बहने वाले नालों, घरों व हटलों के बाहर खड़ी कारों की छत, बाहर रखे पानी व पेड़ पौधों पर बर्फ की हल्की परत जमी पड़ी है। वहीं सर्दी

के प्रकोप के बीच अलाव जलाकर लोग सर्दी से बचने का जतन कर रहे हैं। वहीं घरों में रहने दुबके लोग रूम हीटर का प्रयोग कर रहे हैं। माउंट आबू में इस वर्ष लम्बे समय से सर्दी का प्रकोप देखा जा रहा है। माउंट आबू में एक तरफ जहाँ पारे में गिरावट दर्ज की जा रही है तो अलसूबह पहाड़ों और पोली ग्राउंड सहित अन्य जगह धुंध छाई रही। धुंध से ठंडी हवाओं भी चलती रही। जिसके चलते बाहर लोगों की कंफर्कपी छूट गई।

राशिफल गुरुवार 26 जनवरी, 2023



पंडित अनिल शर्मा

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग सांय 6:57 से आरम्भ होगा। आज बसन्त पंचमी (उत्तर प्रदेश, पूर्वा मध्यप्रदेश, बिहार, असम आदि राज्यों में)। आज तक्षक पूजा, श्री पंचमी, सरस्वती पूजन, रति काम महोत्सव, बागीचरवी जयन्ती यात्रा दर्शन पूजा है। आज पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:39 तक, चर 11:19 से 12:39 तक, लाभ-अमृत 12:39 से 3:19 तक, शुभ 4:39 से 5:37 तक।

राहुकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:59

माघ मास, शुक्ल पक्ष, पंचमी तिथि, गुरुवार, विक्रम संवत् 2079, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र सांय 6:57 तक, शिव योग दिन 3:29 तक, बालव करण दिन 10:29 तक, चन्द्रमा मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-कुम्भ, राहु-मेघ, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग सांय 6:57 से आरम्भ होगा। आज बसन्त पंचमी (उत्तर प्रदेश, पूर्वा मध्यप्रदेश, बिहार, असम आदि राज्यों में)। आज तक्षक पूजा, श्री पंचमी, सरस्वती पूजन, रति काम महोत्सव, बागीचरवी जयन्ती यात्रा दर्शन पूजा है। आज पंचक है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ सूर्योदय से 8:39 तक, चर 11:19 से 12:39 तक, लाभ-अमृत 12:39 से 3:19 तक, शुभ 4:39 से 5:37 तक।

राहुकाल: 1:30 से 3:00 तक। सूर्योदय 7:19, सूर्यास्त 5:59

मेघ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनारल कार्यों में समय खराब हो सकता है। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगा। आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकात्मक आशयन प्राप्त होगी। अटकें हुए कार्य बनने लगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ-मंगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। नवने कार्य विगड़ने का भय बना रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कन्या
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण